ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-५६
दिनांक- शुक्रवार, १४ अगस्त, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३२.३ एवं २०.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८३ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६१ प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ०.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन १.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ३०.१ एवं दोपहर में ३२.२ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में ६४.० मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१५-१६ अगस्त, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १५-१६ अगस्त तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में कहीं-कहीं हल्की वर्षा होने का अनुमान है। अभी दो-तीन दिनों तक वर्षा की संभावना कम है। १८ अगस्त के बाद वर्षा में वृद्धि होने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २५-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७५ से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५५ से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- मक्का की खड़ी फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। यह कीट फसल को काफी नुकसान करता है। इस कीट की सूंडियाँ पहले कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर उन्ही से होते हुए तने में पहुच जाती है एवं तने के गूद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। फलतः मध्य कलिका मुरझाकर सुखी हुई नजर आती है एवं इसे अगर पकड़कर खींचा जाए तो वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर कार्बोफ्यूरान (३ जी) का ७ किलोग्राम/हे० की दर से पौधें के गाभा में डालें।
- अगात बोई गई धान की फसल में तना छेदक तथा पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। धान की फसल से खरपतवार निकालने का कार्य करें।
- सितम्बर अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करे। जुलाई माह वाली अरहर की फसल में निकौनी तथा छटनी करे।
- पपीता की नर्सरी उथली क्यारियों (१०-१५ सेन्टी मीटर ऊँची) में बोयें। इसके लिए उन्नत प्रभेद पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डीलीसीयस, सी०ओ०- ०७, सुर्या एवं रेड लेडी है। बीजदर ३००-३५० ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बीज को वैविस्टन २ ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर क्यारियों में ०७-१० सेन्टीमीटर की दुरी पर बोयें। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए ४० प्रतिशत छायादार नेट से ६-७ फीट की ऊचाई पर ढ़कने की व्यवस्था करें।
- प्याज की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी-छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई २ मीटर एवं लम्बाई ३ से ५ मीटर तक रखे। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवश्य बनावें। रोपाई पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०,पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर करें।
- उचॉस जमीन परवल की राजेन्द्र परवल-१, राजेन्द्र परवल-२, एफ०पी०-१, एफ०पी०-३, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई०आई०भी०आर०-१ आदि किस्मों की रोपनी करें। बीज दर २५०० गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दुरी २ ग २ मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढ़ा कम्पोस्ट ३ से ५ किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली २५० ग्राम, एस०एस०पी० १०० ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश २५ ग्राम एवं थिमेट १० से १५ ग्राम का व्यवहार करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। अगात रोपी गयी फुल गोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे एवं प्रकोप दिखाई देने पर वचाव हेतु स्पेनोसेड दवा एक मी०ली० प्रति ४ लीटर पानी में घोलकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- पशुओं को वर्षा के पानी से एवं जलजमाव के पानी से बचायें। बाढ़ का पानी को पशुओं को न दे कर साफ पानी पिलायें। बाढ़ के पानी मे भिगें हरा चारा को नही खिलायें अथवा साफ पानी में धोकर ही खिलायें। पशुओं के गोबर, पेशाब एवं अन्य कचरे को उचित स्थान पर रखें। ऐसा न करने से पशु गृह में मक्खी, परजीवी किलनी एवं रोगवाहक कीड़े मकोड़े पनपते है एवं संक्रमन फैलाते हैं। इस मौसम मे पशु गृह को हवादार रखें एवं नियमित रूप से साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें।
- इस मौसम में दुधारू पशुओं की पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है एवं पशुओं में टिमपैनी, ब्लौट जैसे लक्षण आने लगते है। इससे जानवरों का पेट फुल जाता है एवं लंगड़ाने लगते है। इससे बचाने के लिए प्रोबायोटिक दवाओं का प्रयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३३.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.२ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २२.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.१ डिग्री कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी